Gyanvividha, Vol.-2; Issue-1 (January-March) 2025 : PP-95-100

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

Online ISSN : 3048-4537
IIFS Impact Factor-2.25
Vol.-2; Issue-1 (Jan.March) 2025
Page No.- 95-100
©2025 Gyanvividha
www.journal.gyanvividha.com

डॉ0 राधा कुमारी
सहायक प्राध्यापिका
मैथिली विभाग, पूर्णिया महिला महाविद्यालय,पूर्णिया-854301.

Corresponding Author :

डॉ0 राधा कुमारी
सहायक प्राध्यापिका
मैथिली विभाग, पूर्णिया महिला महाविद्यालय,पूर्णिया-854301.

कतेक रास बात : काव्य संकलनक समीक्षात्मक अवलोकन

परिचय : 'कतेक रास बात' काव्य संकलनक कवि रामानंद रेणु छथि | हिनक पूर्ण नाम रामानंद लालदास छलन्हि, ई मैथिली भाषाक विख्यात साहित्यकार छलाह | हिनक जन्मस्थान दरभंगा जिलाक अंतर्गत उसमामठ ग्राम,पोस्ट मदनपुर मे 03-01-1934 मे भेल छल | ई हिंदी विषय सं एम0 ए0 कयलनि | हिनक कार्य- वृति दूरभाष विभाग मे छल | ओहि क्रम मे लेखनक कार्य सेहो करैत छलाह | हिनका वर्ष 2000 मे 'कतेक रास बात' कविता संकलन पर साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त भेलन्हि | एहि कविता संकलनक पहिल संस्करण 1997 इस्वी मे मिथिलांचल प्रकाशन रायसाहब पोखरि, पत्रालय लेहरियासराय, जिला दरभंगा सं प्रकाशित भेल | एकर मुद्रण अर्चना प्रेस न्यू मार्केट, लेहरियासराय सं भेल | रेणु जी 13-08 2011 क काल कलवित भ' गेलाह |

प्रकाशित कृति : लेखनक क्षेत्र मे मैथिली मे हिनक अनन्य पोथी प्रकाशित भेल जें एहि प्रकारे अछि **–'दूध फूल'** उपन्यास(1967), **'कचोट'** कथा-संग्रह (1969), **'त्रिकोण'** कथा-संग्रह(1974), **'अंतहीन आकाश'** कथा-संग्रह (1982), **'अंततः'** कविता संकलन(1969), **'ओकरे नाम'** शोक-काव्य(1972), एवं **'कतेक रास बात'** कविता संकलन(1997) आदि | एकर अतिरिक्त हिनक **सम्पादित पुस्तक – 'समकालीन मैथिली कथाक मूल्यांकन** (आलोचना) 1992 इस्वी में एवं ओहि समयक समसामयिक पत्रिका 'वैदेही' क 1988 सं 1992 तक संपादक रहलाह | एकर अतिरिक्त हिनका फणीश्वरनाथ रेणु स्मृति पुरस्कार प्राप्त छलैन्ह | रेणु जी जीवनक उच्च विचार में आस्था राखैय वला लोक छलाह | हिनक सम्बन्ध में समीक्षक रामानंद झा रमण कहलनि –"एक सफल उपन्यासकार जिनक कथापात्र शोषित समाजक लेल लोक होईत अछि|"

अन्यान्य : आधुनिक मैथिली काव्यलेखनक क्षेत्र में हिनक महत्वपूर्ण योगदान अछि | काव्यक नव रूप आ नव विषयक सम्बन्ध में श्री जयकांत मिश्र अपन ग्रन्थ 'मैथिली साहित्यक इतिहास' में लिखने छथि – "काव्यक जें पुरान परम्परा आबि रहल छल ओकरा सं हटि नवीन परिस्थितिक समक्ष ठाढ़ भेल कवि लोकनिक एक विशाल मंडली एक एहन कविता लिखबा में लागि पडल जें मिथिला क' जनसामान्य कें जगाय सकय, एहि कवि में एकटा कवि रामानंद रेणु सेहो छलाह | हिनका लोकनि कें ई बोध भेलन्हि जें आब कविता केवल मनोरंजनक हेतु लिखब व्यर्थ थिक एहि में किछु हितोंमुख प्रेरणा सेहो चाही आ जें जनसामान्य कें जगएबा में सेहो समर्थ होयत |"[1] हिनक एहि काव्य – संकलन में "समाज, राजनीतिक एवम वास्तविक चरित्रक समस्त अन्तर्विरोध, व्यक्तित्वक वर्तमान मानसिकता, विवशता एवम मानवीय मुल्यक यथार्थताक जीवंत दस्तावेज अछि | एहि संकलनक अधिकांश कविता सरल, सुबोध एवम काव्यशिल्प किन्तु अनुभूतिक गाम्भीर्य सं ओतप्रोत संवेदनाक तार कें झंकृत करैत रहबा में पूर्णत: समर्थ भेल अछि |"[2]

रचनाकार आजुक सामाजिक व्यवस्थाक प्रति आक्रोश सं भरल छथि आ विद्रोहक स्वर अपन काव्यक माध्यमें मुखरित करैत छथि | ई अपन काव्य में मुख्य रुप सं पश्चिमीय कविताक अन्धानुकरण कएलनि अछि | ओहि समय में आधुनिक मैथिली काव्यक क्षेत्र में नव कविलोकनि नव विषय – वस्तु सभ पर लिखलैन्ह ओहि में रेणु जीक नाम सेहो अग्रगण्य अछि |

विषयवस्तु : एहि काव्य संकलन में कुल 37 गोट काव्य अछि जें एहि प्रकारें अछि –'संकेतक भाषा', 'कथ्य संदर्भित', 'एकटा ठुठ गाछ', 'पथ भ्रष्ट संतान', 'पिता', 'परिचय बोध', 'गाछ ठुठ आकृति', 'भसियाइत हम', 'जरैत दिशाक स्वर', 'अनुतरित प्रश्न', 'आत्महत्या', 'छटपटाइत हम', 'हमर देश', 'समुद्र हिमालय आ आकाश', 'क्षणिका', 'हम औनाइत छी', 'विरोधाभासक अतिरिक्त', 'सन्दर्भ जोड़बाक क्रम में', 'रातिक विचित्र वर्तमान', दिनक 'आरंभिक स्थिति में', 'अनचीन्ह आक्रोश', 'अपस्याँत एक टा टुगरक बात', 'समाद भेटला पर', 'एक देश जरि रहल', 'टूटल तागक छोर', 'ताक – क्षेम', 'विवशताक क्षण', 'सापेक्ष सिद्धांत', 'यंत्रणाक भोग', 'आवश्यक विरोध', 'सत्ते सत्य', 'सिद्धांतक प्रस्तुतिकरण', 'धन्य आहां', 'कालखण्डक वर्तमान', 'प्रश्न चेतना', 'स्वानुभूतिक विद्रोह', एवम कोणार्क |

एहि काव्य संकलनक पहिल कविता **'संकेतक भाषा'** में कवि मनुक्खक विवशता ओ वर्तमान मानसिकता कें रेखांकित कएलनि अछि | कवि कहैत छथि समय रुपी चेथरी जाहि सं शोणितक बुन्न खसैत छैक वैह रक्तक बुन्न कदई जकाँ जमि गेल छैक अर्थात् लोक चुप रहबाक लेल विवश भ गेल अछि,मनुष्य भेड़ बकरी जकाँ हाकल जा रहल अछि तखनहूँ चुप अछि जेना बुझाइत छैक कोनो जादूगर अपन मुट्ठी में समस्त रहस्य कें नुका लेने अछि | तहियो कवि कें ई विश्वास छन्हि जे एकदिन ई धुँआ बादरिक रुपी विस्मयकारी स्वरुप धारण करतैक आ फाटल पुरान धरती पर इच्छा कें अंकुरएबाक अवसर भेटत | अंत में कवि ओहि शोणितक बूंद कें चिन्हबाक लेल प्रेरित करैत कहैत छथि –

"दोस्त !
समयक ओहि चेथरी सं खसैत ठोपे- ठोप
शोणितक बुन्न कें चीन्हू
आ अपन दृष्टिक चारुकात

पसरल मकरजाल कें तोरबाक खतरा उठाऊ
आ अपन बाट दीप्तिमान करू, दोस्त !"[4]

तहिना **'कथ्य संदर्भित'** में धरती जें आजादी क' लेल पियासल छल ओ आब पियासल नहि अछि अर्थात् हमसभ आजाद भ गेल छी | मनुक्ख आकाश रूपी गाछक छाहरि में हुरदंग मचा रहल अछि | अपना स्वार्थक लेल अपन नांगट देह के देशक बाट पर ओछा रहल अछि अर्थात् देश में लोक लोकतंत्र बचेबाक लेल नहि बल्कि राजनेता सं अपन स्वार्थक लेल हुनक पैर धएने अछि | मनुष्यक मोन स्थिर नहि छैक समयक चक्रक तर में आई जिनगी पेराइत जा रहल अछि, आश्वासन रुपी मंगलसूत्र टूटी क छिरिया गेल अछि | लोकतंत्रक संबंध में कवि कहैत छथि –

"आजुक लोकतंत्र में
कनियो बसात नहि अछि
आजुक देश धरती नहि अछि
नहि छैक कतहूँ कनियो गर्मी ओ पियास |"[5]

अर्थात् आजुक समय में जे अधिनायक छथि वैह लोकक उपास्य देवता छथि जें करोड़क करोड़ खा क' औंधा रहल छथि आ देशक बारे में कवि अंत में कहैत छथि जें बंचि गेल एकटा मुर्दा देश जे कागज जकाँ फेकाएल पडल अछि | एहि बात सं ई स्पष्ट बुझना जाईछ जें रचनाकार कें मोन में कतेक आक्रोश छन्हि| एहि संकलन में कतेक रास एहन कविता अछि जे जकरा पढला सं ई बुझना जाईछ जे कवि बहुत किछू बात कहय चाहैत छथि से अपन कविताक माध्यमें व्यक्त करैत छथि| **'एकटा ठुठ गाछ'** कविता में कवि देशक स्वतंत्रताक वर्णन कएलनि अछि | देश जखन गुलामीक जंजीर में जकरल छल त' सम्पूर्ण भारतवर्ष अपन पैरक बेरी खोलबाक लेल कतेक उद्विग्न छल आ जखन ओ बेडी खुजि गेल त'लोक मुक्त आकाशक छाह में साँस लेलक | परन्तु कालचक्र त' उनटे चलय लागल जाहि गुलामीक जंजीर तोडबाक लेल हमसभ रक्तक धार बहा देलहूँ आई हमर वैह रक्तकोष पुनः सुखि गेल अछि | आई हम अपनहि में कुकुरालुझी क' रहल छी आ अपनहि में व्यस्त छी | हमर अस्तित्वक विवशता एहि बेध सं घेरा गेल अछि तखनहूँ कवि कें ई विश्वास छन्हि जें एकदिन अन्हारक समस्त परत कें फारि भविष्य हमरा सभहक मार्ग प्रसस्त करत आ फेर एकटा ठुठ गाछ पनगि जाएत | मुदा अंत में एकटा बात जें कविक मोन कें आशंकित क' हुमचि रहल अछि –

"की सते
हम अपन यथार्थ पौलहूँ अछि ?"[6]

तहिना 'पथ भ्रष्ट संतान' में कवि प्रकृति, सूर्य, आकाश, नक्षत्र, ग्रह सं विनती करैत छथि ओकर अपराध कें सार्वजनिक करू आ यथार्थक धरती पर पैर राख दिऔ | हिनक 'पिता कविता में मार्मिक वेदना अछि |

जें पिता हमर भविष्यक दिशा –निर्देश कएलनि आ वर्तमान कें परिचालित कएलननि वैह पिता शब्द जें सम्पूर्ण परोपट्टा में व्याप्तिक सुगंध पसारि दैत छथि आई एकांत भालसरि गाछक सामान भेल छथि | जकर छाह में हमसभ बैसि बखिया उधेसि रहल छी ओहि भालसरी गाछ रुपी पिता कें लोक नहि चिन्हैत अछि | एहि वर्तमान परिस्थिति में लोक एतेक ओझरा जाईत अछि जें ओकरा समस्या सिक्करि जकाँ गछारने रहैत अछि | ओकर समाधान ओहि भालसरि सं प्राप्त होएत से लोक नहि बुझैत अछि |एहि कविता में ममत्व झलैकत अछि हिनक कहबाक तात्यपर्य ई छन्हि जें जीवनक व्यस्तता मनुक्ख कें एतेक आन्हर क' दैत

छैक ओ भालसरी गाछ रुपी पिता कें बिसरि जाईत अछि |अर्थात् –

"ओ गाछ
जें फड़ आ फूल सं लुधकल रहैत छल
आई फड़ आ फूल विहीन
भालसरीक गाछ
एकांत में ठाढ़ अछि
अनचिन्हार सन |"[7]

एहि संकलनक एकटा कविता **'परिचय बोध'में** कवि अपन मानसिक पीड़ा कें व्यक्त कएलनि अछि| गामक प्रति लोकक मोन में पाहिले जकाँ सदभावना नहि रहि गेल | लोक पलायनवादी भ'गेल | गामक जें अपनत्वक बोध छल ओ आब धराशायी भ' गेल अछि | हमसब अपन व्यक्तित्व कें पाकल बांस बनाब में लागल छी आ अपना परिचय कें छोरि अपन क्रियाकलाप सं अपना कें सार्थक करैय चाहैत छी | मुदा जिनगीक भागमभाग में हमर परिचय नहि जानि! कतय भुतिया जाईत अछि | सदिखन हम संज्ञाहीन भ' कोनो इजोतक प्रतीक्षा में अनभुआर बाट के जोहैत रहैत छी | तहिना 'भसियाइत हम' कविता में मनुक्खक पथभ्रष्टता जें ओकर गंतव्य कें भुतिया दैत अछि आ चेतनाक स्वर हेरा गेल अछि तहियो लोक जिनगीक दौड - भाग में लागल रहैत अछि कविकें एहि बातक बड कचोट छैन्ह | एहिलेल हम स्वयं कें अपराधी त' मानैत छी मुदा अपनहि हाथक बनाओल फांस में सभ फासल रहैत छी | अर्थात् कविक कहबाक तात्यपर्य ई जें मनुक्ख त' स्वार्थी होएत अछि मुदा कहिया लोक निःस्वार्थ भाव सं एक- दोसराक काज आओत | मनुक्ख आई अनचाहल विवशता में ऐना बन्हा जाईत अछि जें ओकर समस्त आशा – आकांक्षा मटियामेंट भ' गेल अछि |

हिनक एकगोट **कविता 'आत्महत्या'** जाहि सं हम प्रभावित छी आ कविए जकाँ हमरहूँ मोन में ई प्रश्न सदिखन आबैत अछि – केओ किएक आत्महत्या करैत अछि? एहि कविता में कवि आत्महत्याक कारण -- -'यथार्थ' क' दोसर नाम आत्महत्या कहलनि | मुदा ई गंभीर प्रश्न कविक मोन में हिलोर मारि रहल छन्हि जें आत्महत्या कोनो समस्याक निदान आकि निराकरण कोना भ' सकैत छैक? जदि 'यथार्थ' क दोसर नाम आत्महत्या थीक त' आत्महत्याक पश्चात् ओहि स्थिति कए पुनः कें भोगि सकतैक ? ई चिंतन बड गंभीर थीक जें आजुक युग में दिन-ब-दिन बढ़ले जा रहल अछि | एहि कविताक दू पांति द्रष्टव्य **–**

"फोंका भेल तरबा में,

आ फसरी लगाऊ गरदन में |"[8]

लोक ऐना किएक करैत अछि ? जं केओ गृहकलह, बेकारी राजनीति, दोख झापब आदिक नाम आत्महत्या दैत छथि त ई पूर्णतः झूठ थिक कारण मनुक्ख कें यथार्थक सामना करबाक सामर्थ्य नहि रहैत छन्हि जाहि कारनें ओ आत्महत्याक लेल विवश भ' जाईछ | ई हमर अपन सोच ! अंत में कविक दू पांति द्रष्टव्य जाहि सं कविक अंतरवेदना झलकि रहल अछि –

"अन्हार घर साँपे – साँप,
शब्दक चीत्कार
हमर कान आब फाटी जायत,
आत्म ----हत्या----आत्म---- हत्या |"[9]

कवि दूरद्रष्टा छलाह आ ओहिकालक जें सामयिक स्थिति छल ओहि सं अपना कें फराक कोना राखितथि| ई अपन रचना में सामाजिक, आर्थिक,राजनीतिक आदि

विषय पर अपन मनोभाव कें काव्यक रुपें उद्गार कएलनि | हिनक **छटपटाइत मोन'** कविता में आजुक युग – पद्धति जें समय- चक्र सं बुनल जा रहल अछि आ हमरा लोकनि नांगट भ' सभ तमाशा देखि रहल छी आओर अपनहि वर्तमान आ भविष्य कें खकसियाह क' रहल छी | समय – चक्र हमरा आँखी पर पट्टी बान्हि एकै स्थान पर कोल्हुक बैल जकाँ घुमा रहल अछि | कविक मोन छटपटा रहल छन्हि ई स्वार्थी – अंध,समाज में बाढ़ीक पानि जकाँ हुहुआएत सगरो पसरल अछि आ हमर वैचारिक क्षमता कें आत्मसात कैने जा रहल अछि | ई सब देखतहूँ हम माटिक मुरुत बनल अपन व्यक्तित्व आ अस्तित्व कें बिसरल छी | एहि कविता में आत्मकचोटक भावना देखना जाईछ | एकटा आओर कविता 'हम औनाइत छी' में कवि मनुक्खक क्रियाकलाप आ ओकर विवशता कें उजागर कएलनि | मानव झुठक स्वांग रचि अपना कें आनन्दित रहबाक जें ढोंग करैत अछि ओ ओकर आनंद नहि ब्लकि ओ अपनहि कें ठकि रहल अछि | हुनक जिनगी प्रतीकात्मक तथ्य थिक एयेह सत्य अछि |एहि विषय पर कोनो एक प्रश्न पर विचार करब निरर्थक अछि तैं कवि कहैत छथि –

"गत्र-गत्र में केंसर अछि

इलाजक सम्भावना शेष की रहैत अछि तखन ?"[10]

अर्थात् धरती पर जे उपजल ई दोगला संस्कृति ओ ककरो नहि निरसि सकलैक अछि | कवि ई सोचि व्याकुल भेल छथि आ चारुकात औनाइत छथि |

तहिना **'दिनक आरंभिक स्थिति** में' कविता जिज्ञासापरक अछि | एहि में मनुक्खक जिज्ञासाक आरम्भ कोना होईत अछि आ लोक ओहि आरंभिक अवस्था में कतेक तीव्र भ' जाईत अछि ओकर वर्णन बड सहज रुपे कएलनि | कवि कहैत छथि जें हम अपन प्रवृति स्वयं संयोजित करब आ स्वयं समस्त पद्धति कें स्वयंक स्तर पर प्रस्तुत करब | कवि प्रत्येक परिस्थिति में अपन जिज्ञासा पर बल देलनि आ स्वयं कें चीन्हि डेग उठेबाक लेल प्रेरित कएलनि | एहि तरहें **'अनचीन्ह आक्रोश'** में कविक आक्रोश व्याप्त छन्हि | विश्वास रुपी स्फुलिंग सं हमर मोन उधिया रहल अछि आ हम निषेधक लक्ष्मण रेखा सं जेना घेरा गेल छी | गामक घोल-घपच्चा क' बीच चिचियाइत छी मुदा हमर चिचियायब स्वरक अथाह समुद्र में बिलाएल जा रहल अछि आ हम अप्स्यात छी | कविक कहबाक तात्यपर्य जें हमर ई घेराएल मोन, हमर इंद्रिय, हमर मस्तिष्क अपन जगह त' कार्यरत अछिए अंततः हम निदान ताकिए लेब |

तहिना **'विवशताक क्षण'** में कवि लोकक दोहरा जीवन – वृति पर कलम चलौलनि | कवि कहैत छथि जें हमरा सभहक समक्ष एकटा अपरिचित मुखमुद्रा ठाढ़ अछि आ हमसभ विवशताक कठघरा में उचितिक चेफरी उधेसी रहल छी | अर्थात् हमर परम्परागत सम्पर्क सभ टूटी रहल अछि | हमर दैनिक अनुभूति क्षतिग्रस्त भ' रहल अछि , कवि कहैत छथि –

"बन्धु हम एकसरि बिछोहक बोझ उघि नहि सकब ,

एतुका प्रत्येक व्यक्ति दोहरा जीवन जीवैत अछि |

ओकर पैशाचिक वृति / हमर एकसरुआ प्रवृति कें

सर्वग्रास क' लेत

आ हमर स्वीकृति नकारि देल जायत |"[11]

अर्थात् एहनो विवश परिस्थितिक क्षण में कवि हार नै मानैत छथि आ ककरो आश्रित बनि जिबय नहि चाहैत छथि आ बन्धु –बांधव अपन सौहार्द नहि बिसरथि ताहि लेल प्रेरित करैत छथि |

कविक एकटा आओर कविता **'प्रश्न चेतना'** जाहि में हिनक विचारधारा संसद सं ल' गाम धरि, घर सं ल'

बाहर धरि, बातचीतक सिलसिला एकेटा अछि आ हमर मोनक पीड़ा, दोसरा बेचैनी एकटा विचारधराक सूत्र में बान्हल अछि | एहनो परिस्थिति में हम संतोषक गाछ उगा रहल छी | ककरा कहबै ? कए सुनत ? कविक ई प्रश्नचेतना तार्किक छन्हि |

समीक्षा : प्राय: एहि काव्य संकलन कें अधिकाधिक काव्य में रचनाकारक आक्रोश मनुष्यक विवशता ओ वर्तमान मानसिकता पर झलकि रहल अछि | हिनक पंक्ति में काव्यक लयात्मक गतिक अभाव रहितहूँ जेना बुझाइत अछि जें ई पद्य नहि गद्यक रचना करैत होथि आ लोकक स्थिर मानसिकता पर जोरक प्रहार अपन काव्यक माध्यमें करैत छथि, इ हिनक काव्यक विशेषता बुझना जाइछ | हिनक काव्य अभिव्यक्तिक शैली उक्ति वैचित्र्य उत्पन्न करबाक आग्रह सं अतीत होएत अछि, तैं हिनक कविताक भाषा शिक्षितवर्गक वर्तालापक भाषाक निकट होइत अछि | ई यद्यपि समाजसापेक्ष कविताक रचना क देशदशाक चित्रण अपन काव्य में कएने छथि जनिक रचना में समसामयिक जीवनक संवेदना ओ बौद्धिक चेतनाक तीव्र अभिव्यक्ति भेल अछि | डा0 दुर्गानाथ झा 'श्रीश' अपन मैथिली साहित्यक इतिहास में लिखलैंन्ह – "1970 इस्वीक पश्चात् अनेक प्रतिभाशाली नवीन कविक अवतरण भेल आओर किछु पूर्व अवतरित भ' अपना कें आधुनिक मैथिली कविताक क्षेत्र में नीक जकाँ प्रतिष्ठित कए सकलाह ओहि कविगण में रामानंद रेणुक नाम सेहो महत्वपूर्ण अछि|"[3] एहि अवधि में आबि जदि एकदिस नवरीति क' कविता में प्रौढ़ता ओ परिमार्जनक दर्शन होईत अछि, त' दोसर दिस तीक्ष्णता ओ प्रखरताक आभास सेहो भेटैत अछि |

उपसंहार : एहि तरहें एहि काव्य – संकलनक अधिकांश रचना में समाज सापेक्ष आक्रोश भरल अछि | रेणु जीक कविताक अभिव्यक्ति में एक एहन गद्य अछि जें सम्पूर्ण कविता कें गतिशील बनबैत अछि | ई परिवार, समाज आ देश में चलि रहल अन्तर्द्वन्द कें अपन काव्य में चित्रित कएलनि अछि | सिद्ध भ' जाईत अछि जें कविक मोन में कतेक बात छन्हि | हिनक ध्यान आजुक मानव आओर ओकर अनेकानेक समस्या तथा प्रकृति एवम बहुविध तत्व दिस विशेष रुपें आकृष्ट भेल अछि |उपर्युक्त विवेचन सं अंततः हम एहि निष्कर्ष पर पहुँचैत छी जें रामानंद रेणु आधुनिक मैथिली साहित्यक श्रेष्ठ प्रतिभा मध्य विशिष्ट स्थान राखैत छथि | मैथिली काव्य जगत मध्य 'कतेक रास बात' कें महत्वपूर्ण स्थान अछि |

सन्दर्भ – संकेत :-

1. मिश्र डॉ0 श्रीजयकांत – मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ. – 281
2. रामानंद रेणु – कतेक रास बात, पृ.- 01
3. झा डॉ0 श्री दुर्गानाथ 'श्रीश'- मैथिली साहित्यक इतिहास, पृ. – 219
4. रामानंद रेणु – कतेक रास बात, पृ.- 11
5. वएह, पृ. – 13
6. वएह, पृ. – 17
7. वएह, पृ. – 21
8. वएह, पृ. – 35
9. वएह, पृ. – 36
10. वएह, पृ. – 48
11. वएह पृ. – 76

•